!! श्री गनेशाय् नमः !!

!! श्री राम जानकी मन्दिर संध्या राम आरती !!

श्री रामचंन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणं ।

नवकंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणं ।।१।।

कन्दर्प अगणित अमित - छवि नव नील नीरद सुन्दरम् ।

पटपीत मान्हु तड़िंत रुचि शुचि नौमी जनक सुतावरम् ।।२।।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग (अङ्ग) विभूषणम् ।

आजानु भुज शर चाप धर संग्रामजित खर दूषणंम् ।।३।।

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दलन दुष्ट निकन्दनम् ।

रघुनन्द आनन्द कंद कौशलचंद दशरथ नन्दनम् ।।४।।

इति वदति तुलसीदास शंकर(शङ्कर) शेष मुनि मन रंजनम्(रञ्जनम्) ।

मम हृदय कुंज(कुञ्ज) निवास कुरु कामादि खलदल गंजनम् ।।५।।

जय जनक नंदिनी(नन्दिनी) जगत वंदनी(वन्दनी) जन आनंद श्री जानकी ।

रघुवीर नयन चकोर चन्दिनी वल्लभाप्रिय प्राण की ।।६।।

तव कंज(कन्ज) पद मकरन्द स्वादित योगिजन मन अलि किये ।

करि प्रान गत तन आन हिय निर्वान सुख आनत् हिये ।।७।।

सुख खानि मंगल(मङ्गल) दानि अस जिय जानि शरण जो जात है ।

तव नाथ सब सुख साथ करि तेहि हाथ रीझि विकात है ।।८।।

ब्रह्मादि शिव सनकादि सुरपति आदि निज मुख भाषही ।

तव कृपा नयन कटाक्ष चितवनि दिवस निशि अभिलाषही ।।९।।

तनु पाय तुम्हहि बिहाय जड़मति आन मानस देवहिं ।

!! श्री गनेशाय् नमः !!

हत भाग्य सुरतरु त्याग करि अनुराग रेड़हि सेवहिं ।।१०।।

यह आस रघुबर दास की सुखराशि पूरण कीजिए ।

निज चरन कमल सनेह जनक विदेहजा वर दीजिए ।।११।।

अब नाथ करि करुणा बिलोकहु देहु जो वर मांगहुं ।

जेहि जोनि जन्महुं कर्मबस तंह राम पद अनुरागहुं ।।१२।।

मनु जाहि राचेउ मिलहिं सो वर सहज सुन्दर सांवरो ।

करुणा निधान सुजान शीलु सनेहु जानत रावरो ।।१३।।

एहि भाँति गौरी अशीष सुनि सिय सहित हिय हरषीं अली ।

तुलसी भवानिहि पूजि पुनि -पुनि मुदित मन मन्दिर चली ।।१४।।

(सोरठा)

जानि गौरी अनुकूल, सिय हिंय हरषु न जाइ कहि ।

मंजुल(मञ्जुल) मंगल मूल, वाम अंग(अङ्ग) फरकन लगे ।।

(दोहा)

मोसम दीन न दीनहित, तुम समान रघुवीर ।

अस विचार रघुवंश मनि, हरहु विषम भवभीर ।।१।।

कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमि दाम ।

तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोहि राम ।।२।।

प्रनत पाल रघुवंश मणि, करुणा सिंधु-खरारि ।

गये शरण प्रभु राखिहैं, सब अपराध विसारि ।।३।।

श्रवण सुयश सुनि आयऊ, प्रभु भंजन भव भीर ।

त्राहि-त्राहि आरतिहरण, शरण सुखद रघुवीर ।।४।।

!! श्री गनेशाय् नमः !!

अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहहुं निर्वान ।

जनम-जनम रति राम पद, यह वरदान न आन ।।५।।

बार-बार वर मागहुँ, हरषि देहु श्री रंग(रङ्ग) ।

पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग ।।६।।

बरनि उमापति रामगुण, हरषि गये कैलाश ।

तव प्रभु कपिन्ह दिवायेऊँ, सब विधि सुखप्रद वास ।।७।।

एक-मंद मैं मोह वश, कुटिल ह्दय अज्ञान ।

पुनि प्रभु मोहि विसारेउ, दीनबन्धु भगवान ।।८।।

विनति करि मुनि नाइ सिर, कह कर जोरि बहोरि ।

चरन सरोरुह नाथ जनि, कबहुं तजै मति मोरी ।।९।।

नहिं विद्या नहिं बाहुबल, नहिं खरचन को दाम ।

मो सम पतित पतंग(पतङ्ग) की, तुम पति रखहु राम ।।१०।।

एक छत्र एक मुकुट मणि, सब बरनन पर जोउ ।

तुलसि रघुबर नाम के, वरन विराजत दोउ ।।११।।

कोटि कल्प कशी बसे, मथुरा कल्प हजार ।

एक निमिष सरयू बसै, तुलै न तुलसीदास ।।१२।।

रामजी नगरिया राम की, बसे सरयू(गङ्ग) के तीर ।

अचल राज महाराज की, चौकी हनुमत वीर ।।१३।।

कहां कहौ छवि आज(आप) की, भले विराजे (बने हो) नाथ ।

तुलसि मस्तक जब नवै, धनुष बाण लेव(लिये) हाथ ।।१४।।

धनुष बाण हाथन लियो, शीश मुकुट धर शीश।

!! श्री गनेशाय् नमः !!

कृपा कियो दर्शन दियो, तुलसि नवावे शीश ।।१५।।

कित(कृत) मुरली कित(कृत) चन्द्रिका, कित(कृत) गोपियन के साथ ।

अपने जन के कारणे, श्रीकृष्ण भये रघुनाथ ।।१६।।

अवध धाम धामादि पति, औ तारनपति राम ।

सकल सिद्धि पति जानकी, दासन्ह पति हनुमान ।।१६।।

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम ।

दास मालुका कह गये, सबके दाता राम ।।१७।।

रामजी झरोखे बैठके, सबको मुजरा लेन ।

जाकी जैंसी चाकरी, प्रभु ताको तैंसो देन ।।१८।।

कर गहि धनुष चढ़ाइयो, चकित भये सब भूप ।

मगन भई श्रीजानकी, देख राम छबि रूप ।।१९।।

राम वाम दिसि जानकी, लखन दाहिनी ओर ।

ध्यान सकल कल्याण मय, सुर तरु तुलसी तोर ।।२०।।

नील सरोरुह नील मणि, नील निरधर श्याम ।

लाजहि तन शोभा निरखी, कोटि-कोटि सतकाम ।।२१।।

अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारण रहित दयाल(कृपाल) ।

तुलसीदास सठ तहि भजु, छांड़ि कपट जंजाल ।।२२।।

गुरु मूरति मुख चन्द्रमा, सेवक नयन चकोर ।

अष्ट पहर निरखत रहौं, श्रीगुरु चरणन की ओर ।।२३।।

श्रीगुरु महिमा को कहै, अति ही उच्च मुकाम ।

ताते गुरु पद को करौं, बार-बार परनाम ।।२४।।

!! श्री गनेशाय् नमः !!

चलो सखी वहां जाइये, जहां बसैं ब्रजराज ।

गोरस बेचत हरि मिलैं, एक पंथ दो काज ।।२५।।

ब्रज चौरासी कोस में, चार धाम निज धाम ।

बृन्दावन और मधुपुरी, बरसाने नन्दग्राम ।।२६।।

बृन्दावन सो वन नहीं, नन्दग्राम सो ग्राम ।

वंशीवट अस वट नहीं, राम कृष्ण अस नाम ।।२७।।

राधा तू बड़ भागिनी, कौन तपस्या कीन ।

तीन लोक तारन तरन, सो तोरे आधीन ।।२८।।

कोटि न तीरथ कामना, कोटि न रास विलास ।

राजधानी रघुनाथ की, गावै तुलसीदास ।।२९।।

आपन दारुन दीनता, सबही कहौ सिर नाई ।

बिनु देखे रगुनाथ पद, जिय की जरनि न जाई ।।३०।।

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध ।

तुलसि संगत साधु की, हरै कोटि अपराध ।।३१।।

सियावर रामचन्द्र जी की जय ।

श्री अयोध्या रामजी ललाकी जय । श्री पवनसुत हनुमानजी की जय ।

श्री उमापति महादेवजी की जय । श्री रमापति रामचन्द्रजी की जय ।

श्री बृन्दावन बिहारीलाल श्री कृष्ण की जय । श्री बलदाऊजी की जय ।

श्री वनितासुत गरुड़देवजी की जय । श्री सद्गुरु भगवान की जय ।

कुल देवता, ग्राम देवता की जय । नगर बस्ति की जय ।

सकल समाज की जय । बोलो भाई सब सन्तन की जय ।

संध्या आरती की जय । जय-जय सीताराम ।

!! श्री गनेशाय् नमः !!

!! श्लोक !!

नीलाम्बुज श्यामल कोमलाङ्गं, सीता समारोपित वाम भागम् ।

पाणौ महासायक चारु चापं, नमामि रामं रघुवंश नाथम् ।।१।।

भवाब्धि पोतं भरताग्रजं तं,भक्ति प्रियं भानुकुलः प्रदीपम् ।

भूतत्रिनाथं भुवनादिपत्यं, भजामि रामं भवरोग वैद्यम् ।।२।।

लोकाभिरामं रणरंग(रणरङ्ग) धीरं, राजीव नेत्रं रघुवंश नाथम् ।

कारुण्य रूपं करुणाकरं तं, श्री रामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।।३।।

सखेति यत्वा प्रसभं यदुक्तं, हे ! कृष्ण हे ! यादव, हे ! सखेति ।

अजानतां महिमानं तवेद्यं, मया प्रमादात् प्रणयेन वापि ।।४।।

त्वमेव माता च पिता तवमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देवः ।।५।।

शान्ताकारं भुजग शयनं, पद्मनाभं सुरेशम् ।

विश्वाधारं गगन सदृशं, मेघवर्णं शुभांगम(शुभाङ्गम)

लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं, योगभिर्ध्यानगम्यम् ।

वन्दे विष्णु भव भय हरं, सर्व लोकैक नाथम् ।।६।।

अच्युतं केशवं श्रीराम नारायणम्, श्रीकृष्ण दामोदरं श्रीवासुदेवं हरिम् ।।

श्रीधरं माधवं श्रीगोपिका वल्लभम्, श्रीजानकी नायकं श्रीरामचन्द्रं भजे ।।

हरे राम ! हरे राम ! राम राम हरे हरे !!

हरे कृष्ण ! हरे कृष्ण ! कृष्ण कृष्ण हरे हरे !!

!! श्री गनेशाय् नमः !!

!! गायत्री !!

!! ॐ एकदंताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दंती प्रचोदयात् !!

!! ॐ दाशरथाय विद्महे, सीता वल्लभाय धीमहि, तन्नो श्रीरामः प्रचोदयात् !!

!! ॐ जनकनंदिन्यै विद्महे, भुमिजायै धीमहि, तन्नो सीताः प्रचोदयात् !!

!! ॐ रामदूताय विद्महे, कपिराजाय धीमहि, तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् !!

!! ॐ तत्पुरुषाय् विद्महे, महादेवाय धीमहि, तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् !!

!! ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि, तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् !!

!! ॐ महाशूलिन्यै विद्महे, महादुर्गायै धीमहि, तन्नो भगवती प्रचोदयात् !!

!! ॐ महाकाल्यै च विद्महे, श्मशान्वासिन्यै धीमहि, तन्नो काली प्रचोदयात् !!

!! ॐ श्री महालक्ष्म्यैच विद्महे, विष्णु पत्न्यैच धीमहि, तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् !!

!! ॐ वाग् देव्यै च विद्महे, कामराजाय धीमहि, तन्नो देवि प्रचोदयात् !!

!! ॐ गुरुदेवाय विद्महे, परब्रह्माय धीमहि, तन्नो गुरुः प्रचोदयात् !!

!! ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः !!